परिशिष्टव्याकरणम्

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द रवि = सूर्य

जिन शब्दों के अन्त में 'इ' की ध्वनि आती है वे शब्द इकारान्त शब्द कहलाते हैं। जैसे– रवि, पति, हरि, गिरि विधि तथा नीचे अर्थ सहित लिखे शब्दों के रूप रवि के समान चलेंगे।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
कर्ता (प्रथमा)	रविः	रवी	रवयः
कर्म (द्वितीया)	रविम्	रवी	रवीन्
करण (तृतीया)	रविणा	रविभ्याम्	रविभिः
सम्प्रदान (चतुर्थी)	रवये	रविभ्याम्	रविभ्यः
अपादान (पञ्चमी)	रवेः	रविभ्याम्	रविभ्यः
सम्बन्ध (षष्ठी)	रवेः	रव्योः	रवीणाम्
अधिकरण (सप्तमी)	रवौ	रव्योः	रविषु
सम्बोधन	हे रवे!	हे रवी!	हे रवयः!

अग्नि = आग
अतिथि = मेहमान
हरि = विष्णु, बन्दर, शेर
मुनि, ऋषि = तपस्वी
कपि = बन्दर
नृपति = राजा

विधि = भाग्य, विधाता
गिरि = पहाड़
व्याधि = बीमारी
उदधि, वारिधि = समुद्र
अरि = शत्रु
कवि = पद्यरचयिता

Q7C5MX

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'जननी' शब्द (जन्मदात्री माँ)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	जननी	जनन्यौ	जनन्यः
द्वितीया	जननीम्	जनन्यौ	जननीः
तृतीया	जनन्या	जननीभ्याम्	जननीभिः
चतुर्थी	जनन्यै	जननीभ्याम्	जननीभ्यः
पञ्चमी	जनन्याः	जननीभ्याम्	जननीभ्यः
षष्ठी	जनन्याः	जनन्योः	जननीनाम्

सप्तमी	जनन्याम्	जनन्योः	जननीषु
सम्बोधन	(हे) जननि	(हे) जनन्यौ	(हे) जनन्यः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'जननी' की तरह चलेंगे –

वाणी, गौरी, नारी, भवती, सखी, पत्नी, राज्ञी, नगरी, सहचरी, मार्जनी, विदुषी आदि।

स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्द 'स्त्री' (नारी)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि!	हे स्त्रियौ!	हे स्त्रियः!

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द ' भानु ' (सूर्य)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'भानु' के समान चलते हैं –

साधु, गुरु, विष्णु, प्रभु, शिशु, विधु (चन्द्र), पशु, शम्भु, वेणु (बाँस), भृगु, शत्रु, रिपु (शत्रु), उरु (जाँघ), जन्तु, मृत्यु, ऋतु, हेतु (कारण), तरु (वृक्ष) आदि।

उकारान्त 'मधु' (शहद) शब्द नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु, मधो!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

दारु (काठ), जानु (घुटना), तालु, वस्तु आदि शब्दों के रूप ''मधु'' के समान चलेंगे।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग 'वारि' (पानी) शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

सभी इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप (अक्षि, अस्थि, दधि, सक्थि को छोड़कर) 'वारि' के भाँति चलते हैं।

सर्वनाम् ''एतद्'' (यह) पुल्लिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	एषः	एतौ	एते
कर्म	एतम्, एनम्	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्
करण	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
सम्प्रदान	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
अपादान	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः

सम्बन्ध	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
अधिकरण	एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु

सर्वनाम् ''एतद्'' स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	एषा	एते	एताः
कर्म	एताम्, एनाम्	एते, एने	एताः, एनाः
करण	एतया, एनया	एताभ्याम्	एताभिः
सम्प्रदान	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
अपादान	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
सम्बन्ध	एतस्याः	एतयोः, एनयोः	एतासाम्
अधिकरण	एतस्याम्	एतयोः, एनयोः	एतासु

सर्वनाम् ''एतद्'' नपुंसकलिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	एतत्	एते	एतानि
कर्म	एतत्, एनत्	एते, एने	एतानि, एनानि
करण	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
सम्प्रदान	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
अपादान	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
सम्बन्ध	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
अधिकरण	एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु

सर्वनाम् ''यद्'' (जो) पुल्लिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	यः	यौ	ये
कर्म	यम्	यौ	यान्
करण	येन	याभ्याम्	यैः
सम्प्रदान	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
अपादान	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
सम्बन्ध	यस्य	ययोः	येषाम्
अधिकरण	यस्मिन्	ययोः	येषु

सर्वनाम् ''यद्'' स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	या	ये	याः
कर्म	याम्	ये	याः
करण	यया	याभ्याम्	याभिः
सम्प्रदान	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
अपादान	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
सम्बन्ध	यस्याः	ययोः	यासाम्
अधिकरण	यस्याम्	ययोः	यासु

सर्वनाम् ''यद्'' नपुंसकलिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	यत्	ये	यानि
कर्म	यत्	ये	यानि
करण	येन	याभ्याम्	यैः
सम्प्रदान	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
अपादान	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
सम्बन्ध	यस्य	ययोः	येषाम्
अधिकरण	यस्मिन्	ययोः	येषु

विशेषण – संख्यावाची (11 से 20 तक)

एकादशः	–	ग्यारह	(11)
द्वादशः	–	बारह	(12)
त्रयोदशः	–	तेरह	(13)
चतुर्दशः	–	चौदह	(14)
पञ्चदशः	–	पन्द्रह	(15)
षोडशः	–	सोलह	(16)
सप्तदशः	–	सत्रह	(17)
अष्टादशः	–	अट्ठारह	(18)
नवदशः, एकोनविंशतिः, उनविंशतिः	–	उन्नीस	(19)
विंशतिः	–	बीस	(20)

–: कारकों का विशिष्ट परिचय :–

पिछली कक्षा में हमने कारकों का सामान्य परिचय प्राप्त कर लिया है कि कारक, से प्रायः संज्ञा और सर्वनाम युक्त होते हैं और क्रियाओं से संबद्ध होते हैं। कारकों (कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध व अधिकरण) के सामान्य प्रयोग के बाद करण कारक (तृतीया विभक्ति) व सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति) के विशिष्ट प्रयोग को ज्ञात करेंगे।

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

क्रिया को करने में कर्ता जिस साधन की अधिक सहायता लेता है उसे करण कारक कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– सः कलमेन पत्रं लिखति (वह कलम से लिखता है।)

1. सह, साकम्, समम्, सार्धम् तथा समानार्थक अव्ययों के साथ (जिनके साथ कोई क्रिया की जाए) उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

   जैसे – बालकः पित्रा सह गच्छति।
   (बालक पिता के साथ जाता है।)

2. विकृत अङ्ग वाचक शब्द में जिसमें विकृति बतलाई जाए उसमें तृतीया विभक्ति लगती है।

   जैसे – नेत्रेण काणः। (आँख से काना)
   कर्णेन बधिरः। (कान से बहरा)

3. हेतु या कारण के अर्थ में तृतीया विभक्ति लगती है।

   जैसे – नरः सभायां विद्यया शोभते।
   (मनुष्य सभा में विद्या के कारण शोभित होता है।)

4. पृथक (अलग), बिना, नाना आदि शब्दों के साथ द्वितीया, तृतीया अथवा प×चमी विभक्ति हो सकती है।

   जैसे – जलं, जलेन, जलाद् बिना मत्स्याः स्थातुं न शक्नुवन्ति।
   (पानी के बिना मछलियाँ जिन्दा नहीं रह सकती।)

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

जब कोई कार्य किसी के लिए किया जाए अथवा जिसके लिए किया जाए उसे सम्प्रदान कारक कहा जाता है। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे – सः, संदेशाय पत्रं लिखति।
(वह संदेश के लिए पत्र लिखता है।)

1. 'दा' धातु के योग में (जिसे कोई वस्तु दिया जाए) चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे – सः ब्राह्मणाय धनं ददाति।
(वह ब्राह्मण को धन देता है।)

2. 'रुच्' धातु के योग में (जिसको रुचता हो), 'क्रुध्', द्रुह्, असूय् आदि धातुओं के योग में (जिससे क्रोध, द्रोह और ईर्ष्या किया जाए) चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे – 1. गणेशाय मोदकं रोचते।
(गणेश को लड्डू अच्छा लगता है।)
2. मह्यम् आम्रं रोचते।
(मुझे आम अच्छा लगता है।)
3. पिता पुत्राय क्रुध्यति।
(पिता पुत्र पर क्रोध करता है।)
4. असन्तुष्टः धनिकाय ईर्ष्यति।
(असन्तुष्ट धनवान से जलता है।)
5. दुर्जनः सज्जनेभ्यः असूयन्ति।
(दुष्ट सज्जनों से द्वेष करते हैं।)

3. नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी होती है अर्थात् जिसको नमस्कार किया जाए, जिसकी कल्याण की कामना की जाए, जिसके लिए आहूति दी जाए या जिसके लिए किसी को पर्याप्त बताया जाए उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे – 1. गणेशाय नमः। (गणेशजी को नमस्कार है।)
2. जनेभ्यः स्वस्ति। (मनुष्यों का कल्याण हो।)
3. अग्नये स्वाहा। (यह आहूति अग्नि के लिए है।)
4. गजेभ्यः पत्राणि अलम्। (हाथियों के लिए पत्ते पर्याप्त हैं।)

क्रिया–धातुरुप लोट्लकार (परस्मैपद)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अतु	अताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	अ	अतम्	अत
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

लोट्लकार चर् चलना (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरतु	चरताम्	चरन्तु
मध्यम पुरुष	चर	चरतम्	चरत
उत्तम पुरुष	चराणि	चराव	चराम

◆ **निम्नलिखित धातुओं के रूप चर् की तरह चलते हैं :–**

वस्	– (वसति) रहना।	नृत्	– (नृत्यति) नाचना।
रक्ष्	– (रक्षति) रक्षा करना।	कथ्	– (कथयति) कहना।
हृ (हर्)	– (हरति) ले जाना, चुराना।	कुप्	– (कुप्यति) क्रोधित होना।
नी (नय्)	– (नयति) ले जाना।	पा (पिब्)	– (पिबति) पीना।
दा (यच्छ्)	– (ददाति) देना।	वद्	– (वदति) कहना।

लोट्लकार आत्मनेपद – धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय :–

लोट्लकार (आज्ञार्थक) (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अताम्	एताम्	अन्ताम्
मध्यम पुरुष	अस्व	एथाम्	अध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐ	आवहै	आमहै

लोट्लकार "रम्" रमण करना (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रमताम्	रमेताम्	रमन्ताम्
मध्यम पुरुष	रमस्व	रमेथाम्	रमध्वम्
उत्तम पुरुष	रमै	रमावहै	रमामहै

◆ **निम्नलिखित धातुओं के रूप "रम्" धातु की तरह चलते हैं :–**

वन्द्	– (वन्दते) प्रणाम करना।	याच्	– (याचते) माँगना।
लभ्	– (लभते) पाना।	रुच्	– (रोचते) अच्छा लगना।

विधिलिङ् परस्मैपद :– धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय
विधिलिङ् (कर्त्तव्य बोधक) (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एत्	एताम्	एयुः
मध्यम पुरुष	एः	एतम्	एत
उत्तम पुरुष	एयम्	एव	एम

विधिलिङ् ''चर्'' चलना (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरेत्	चरेताम्	चरेयुः
मध्यम पुरुष	चरेः	चरेतम्	चरेत
उत्तम पुरुष	चरेयम्	चरेव	चरेम

विधिलिङ् आत्मनेपद :– धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय :–
विधिलिङ् (कर्त्तव्य बोधक) (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एत	एयाताम्	एरन्
मध्यम पुरुष	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
उत्तम पुरुष	एय	एवहि	एमहि

विधिलिङ् ''रम्'' रमण करना (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रमेत	रमेयाताम्	रमेरन्
मध्यम पुरुष	रमेथाः	रमेयाथाम्	रमेध्वम्
उत्तम पुरुष	रमेय	रमेवहि	रमेमहि

सन्धि

सन्धि की परिभाषा :– दो वर्णों के संयोग (मेल) से होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते हैं।

यथा – विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

उक्त सन्धि में विद्या का अंतिम वर्ण 'आ' तथा अर्थी शब्द का आरम्भिक वर्ण 'अ' के बीच सन्धि हुई और आ + अ = आ रूप बना।

सन्धि के प्रकार :– संस्कृत भाषा में सन्धि के तीन प्रकार हैं – (1) स्वर सन्धि,(2) व्यञ्जनसन्धि (3) विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि के प्रकार :– स्वर सन्धि के छः प्रकार हैं – यथा – दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि और पूर्वरूप है। स्वर सन्धि में दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि एवं पूर्वरूप स्वर सन्धि के बारे में पढ़ेंगे।

1. **दीर्घ स्वर सन्धि** – अ, इ, उ के आगे क्रमशः अ, इ, उ के होने पर दोनों के स्थान में दीर्घ हो जाता है।

उदाहरण –	विद्या	+	आलयः	=	विद्यालयः
	शिव	+	आलयः	=	शिवालयः
	विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी
	हिम	+	आलयः	=	हिमालयः
	रवि	+	इन्द्रः	=	रवीन्द्रः
	परि	+	ईक्षा	=	परीक्षा
	भानु	+	उदयः	=	भानूदयः

Q7IZQH

2. **गुण स्वर सन्धि** :– ए, ओ तथा अर् को गुण कहते हैं। अ के आगे इ, उ और ऋ होने पर उसके स्थान में क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाता है।

उदाहरण –	उप	+	इन्द्रः	=	उपेन्द्रः
	नर	+	ईशः	=	नरेशः
	ईश्वर	+	उपासना	=	ईश्वरोपासना
	सप्त	+	ऋषिः	=	सप्तर्षिः
	गण	+	ईशः	=	गणेशः
	महा	+	उत्सवः	=	महोत्सवः
	महा	+	इन्द्रः	=	महेन्द्रः

3. **वृद्धि स्वर सन्धि** :– 'अ' या 'आ' के आगे 'ए' या 'ऐ' होने पर सन्धि–रूप 'ऐ' होता है तथा 'अ' या 'आ' के आगे 'ओ' या 'औ' होने पर सन्धि–रूप 'औ' होता है।

जैसे :–	तत्र	+	एव	=	तत्रैव
	सदा	+	एव	=	सदैव

मत	+	ऐक्यम्	=	मतैक्यम्
महा	+	ऐश्वर्यम्	=	महैश्वर्यम्
वन	+	औषधिः	=	वनौषधिः
शील	+	औचित्यम्	=	शीलौचित्यम्
महा	+	औदार्यम्	=	महौदार्यम्

4. यण् स्वर सन्धि :–

(i) 'इ' या 'ई' के आगे कोई भिन्न स्वर आए तो इनके स्थान पर 'य्'
(ii) 'उ' या 'ऊ' के आगे कोई भिन्न स्वर आए तो इनके स्थान पर 'व्'
(iii) ऋ के आगे कोई भिन्न स्वर आए तो उसके स्थान पर 'र्' सन्धि रूप होते हैं।

जैसे :–	यदि	+	अपि	=	यद्यपि
	नदी	+	आसीत्	=	नद्यासीत्
	अनु	+	अयः	=	अन्वयः
	वधू	+	आसनम्	=	वध्वासनम्
	पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा

5. अयादि स्वर सन्धि :– 'ए' के आगे कोई स्वर आए तो 'अय्', 'ऐ' के बाद कोई स्वर आए तो 'आय्', 'ओ' के आगे कोई स्वर आए तो 'अव्' तथा औ के आगे कोई स्वर आए तो "आव्" हो जाता है।

जैसे :–	शे	+	अनम्	=	शयनम्
	नै	+	अकः	=	नायकः
	गो	+	एषणा	=	गवेषणा
	पौ	+	अकः	=	पावकः

6. पूर्वरूप सन्धि :– पद के अन्त में 'ए' या 'ओ' के आगे ह्रस्व (छोटा) 'अ' आने पर 'अ' का पूर्णस्वर में विलय हो जाता है और 'अ' के स्थान पर 'ऽ' (अवग्रह) का चिह्न लगा दिया जाता है।

जैसे :–	जले	+	अस्मिन्	=	जलेऽस्मिन्
	हरे	+	अत्र	=	हरेऽत्र
	वृक्षे	+	अपि	=	वृक्षेऽपि
	वृक्षे	+	अत्र	=	वृक्षेऽत्र

ध्यान देवें :– "सुबन्तं तिङ्न्तं च पद संज्ञं स्यात्" सुबन्त और तिङ्न्त की पद संज्ञा होती है अर्थात् कारक रचना और क्रियारूप से बने शब्दों को 'पद' कहा जाता है।

समास

समास की परिभाषा :– दो या दो से अधिक पदों को मिलाने या जोड़ने को समास कहते हैं। समास का अर्थ है संक्षेप 'समसनं' इति समासः। समास में आए पदों का अर्थ स्वतंत्र होता है किन्तु जब समास बन जाता है तब इसका एक सामूहिक अर्थ होता है। समास करने पर समास में जुड़े हुए पदों के बीच विभक्ति नहीं रहती बल्कि अन्त में विभक्ति लगती है।

समास से जुड़े हुए पद को सामासिक पद कहते हैं। सामासिक पद को विलग करने को विग्रह कहते हैं।

जैसे :– 'राष्ट्रपतिः' इस सामासिक पद का विग्रह 'राष्ट्रस्य पति' होगा।

समास के प्रकार :– समास के छः प्रकार होते हैं – (1) तत्पुरुष, (2) द्विगु, (3) द्वन्द्व, (4) कर्मधारय, (5) बहुब्रीहि तथा (6) अव्ययी भाव।

1. तत्पुरुष समास :– तत्पुरुष समास में प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है अर्थात् प्रथम पद, दूसरे पद की विशेषता बताता है। इस समास का विग्रह करने पर प्रथम पद में द्वितीया से सप्तमी तक विभक्तियाँ लगती है।

	दुःखापन्नः	–	दुःखम् आपन्नः
	बाणहतः	–	बाणेन हतः
जैसे :–	दीनदानम्	–	दीनाय दानम्
	चौरभयम्	–	चौरात् भयम्
	परोपकारः	–	परेषां उपकारः
	ग्राम सेवकः	–	ग्रामस्य सेवकः
	सभापण्डितः	–	सभायां पण्डितः

2. द्विगु समास :– संख्यावाचक शब्द पहले रहने पर तत्पुरुष समास की द्विगु संज्ञा होती है। (संख्यापूर्वो द्विगुः) द्विगु समास तीन प्रयोजनों से किए जाते हैं – (1) समाहार (समूह) बताने के लिए, (2) उत्तरपद संयोजन के लिए, (3) तद्धित प्रत्यय जोड़ने के लिए।

जैसे :–	नवरत्नम्	–	नवानां रत्नानां समाहारः
	पञ्चवटी	–	पञ्चानां वटानां समाहारः
	त्रिपथम्	–	त्रयाणां पथां समाहारः

3. द्वन्द्व समास :– इस समास में दो या दो से अधिक पद समान अधिकरण के होते हैं जो आपस में 'च' से जुड़े होते हैं। (उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः)

इतरेतरद्वन्द्व – के सभी पद समान रूप से महत्वपूर्ण एवं स्वतंत्र होते हैं। समस्त पद की संख्या के अनुसार वचन तथा अन्तिम पद के लिङ्ग के अनुसार लिङ्ग होता है।

समाहार द्वन्द्व में समस्त पद मिलकर नए अर्थ देते हैं। समस्त पद नपुंसकलिङ्ग एक वचन होता है।

एक शेष द्वन्द्व में समस्त पद होने पर उसमें से एक (प्रथम पद) लुप्त हो जाता है।

जैसे :–	रामलक्ष्मणौ	–	रामः च लक्ष्मणः च
	कृष्णार्जुनौ	–	कृष्णः च अर्जुनः च
	रामलक्ष्मणसीताः	–	रामः च लक्ष्मणः च सीता च
	दधिपयसी	–	दधि च पयश्च
	पाणिपादौ	–	पाणी च पादौ च
	रथिकाश्वारोहम्	–	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च
	आसनपाद्यम्	–	आसनं च पाद्यं च
	पितरौ	–	माता च पिता च

4. कर्मधारय समास :– इस समास में पूर्वपद विशेषण होता है और जिसके दोनों पद विग्रह करके कर्ता कारक में ही रखे जा सकते हैं। कभी–कभी कर्मधारय के दोनों की पद संज्ञा या दोनों ही पद विशेषण होते हैं। कभी–कभी पूर्वपद संज्ञा और उत्तर पद विशेषण होता है।

जैसे :–	पीतवस्त्रम्	–	पीतं च तत् वस्त्रम्
	नीलकमलम्	–	नीलं च तत् कमलम्
	कृष्णसर्पः	–	कृष्णः च असौ सर्पः
	घनश्यामः	–	घनः इव श्यामः
	मुखकमलम्	–	मुखं कमलम् इव

5. बहुब्रीहि समास :– इस समास में पूर्वपद और उत्तर पद के अर्थ मिलकर किसी अन्य पदार्थ की विशेषता प्रकट करते हैं जो पूरे पद में विद्यमान नहीं होता।

जैसे :–	पीताम्बरः	–	पीतम् अम्बरम् यस्य सः (विष्णुः)
	दशाननः	–	दश आननानि यस्य सः (रावणः)
	वीणापाणिः	–	वीणा पाणौ यस्याः सा (सरस्वती)
	मृगनयना	–	मृगस्य नयने इव नयने यस्याः (सुन्दरी)

6. अव्ययीभाव समास :– यह समास दो पदों का बनता है जिसका पहला पद अलग तथा दूसरा पद संज्ञा होता है। पूरा पद नपुंसकलिङ, कर्ता कारक, एक वचन, के रूप में बन जाता है पर उसके रुप नहीं चलते।

जैसे :–	उपशालम्	–	शालायाः समीपम्
	उपकृष्णम्	–	कृष्णस्य समीपम्
	यथाशक्ति	–	शक्तिम् अनतिक्रम्य
	उपग्रामम्	–	ग्रामस्य समीपम्
	प्रतिदिनम्	–	दिनं दिनम्

उपसर्ग

उपसर्ग ऐसे शब्दांश हैं जो संज्ञादि शब्दों और क्रियाओं से पूर्व लगकर शब्दों के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। उपसर्ग सोदाहरण :–

अनु – (पीछे, साथ–साथ, हीन, समान, ओर)

जैसे :–	अनु	+	करण	=	अनुकरण	(नकल करना)
	अनु	+	कूल	=	अनुकूल	(उपयुक्त)
	अनु	+	चर	=	अनुचर	(सेवक)

अव – (दूर, अनादर, अवलम्ब)

जैसे :–	अव	+	नति	=	अवनति	(नीचे जाना (पतन)
	अव	+	काश	=	अवकाश	(छुट्टी)
	अव	+	धान	=	अवधान	(गतिरोध)

आ – (स्वीकृति, दुःख, निकट)

जैसे :–	आ	+	हार	=	आहार	(भोजन)
	आ	+	चार	=	आचार	(अच्छा आचरण)
	आ	+	क्रमण	=	आक्रमण	(हमला)

उप् – (निकट, शक्ति, व्याप्ति, दोष, अन्त, दान, यत्न)

जैसे :–	उप	+	आसना	=	उपासना	(पूजा करना)
	उप	+	देश	=	उपदेश	(सीख)
	उप	+	क्रम	=	उपक्रम	(व्यवसाय)

प्र – (विशेष रूप से)

जैसे :–	प्र	+	हार	=	प्रहार	(हमला, आक्रमण करना)
	प्र	+	माण	=	प्रमाण	(साक्ष्य, सबूत)
	प्र	+	भाव	=	प्रभाव	(छाप)

प्रति –(ओर, पीछे, विरोध में, ऊपर, नीचे, समान)

जैसे :–	प्रति	+	कूल	=	प्रतिकूल	(विपरीत)
	प्रति	+	शब्द	=	प्रतिशब्द	(आवृत्त ध्वनि)

सम् – (साथ, विशेष रूप से, समान)

जैसे :–	सम्	+	हार	=	संहार	(जान से मारना)
	सम्	+	अर्पण	=	समर्पण	(सौंप देना)
	सम्	+	अक्ष	=	समक्ष	(सामने)

"अव्यय"

जिनका रूप परिवर्तन नहीं होता ऐसे शब्द अव्यय कहलाते हैं, अथवा तीनों लिङ्गों सभी विभक्तियों और सभी वचनों में जो समान रहता है, वह अव्यय है।

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

कुछ अव्यय अर्थ के साथ निम्नलिखित हैं :–

अधुना	=	अब, आजकल	अथ	=	तब, पीछे
अद्य	=	आजकल	अथकिम्	=	हाँ
ह्यः	=	कल (बीता हुआ)	अलम्	=	पर्याप्त
श्वः	=	कल (आने वाला)	इह	=	यहाँ
अधः	=	नीचे	इति	=	ऐसा
पश्चात्	=	बाद में	क्व	=	कहाँ
उपरि	=	ऊपर	खलु	=	अवश्य ही
ततः	=	फिर	तत्	=	इसलिए
यतः	=	क्योंकि	तथा	=	ऐसा ही
कुतः	=	कहाँ से	तदानीम्	=	तब
सर्वतः	=	सभी ओर से	तर्हि	=	तो, तब
पुरतः	=	आगे, सामने	तावत्	=	तब तक
पुरः	=	आगे, सामने	न	=	नहीं
पुरस्तात्	=	आगे, सामने	ध्रुवम्	=	निश्चय ही
यदा	=	जब	नहि	=	नहीं
कदा	=	कब	नूनम्	=	अवश्य ही
तदा	=	तब	परम्	=	तो
कथम्	=	कैसे	परितः	=	चारों ओर
अतः	=	इसलिए	पुनः	=	फिर
अपि	=	भी	पुरा	=	पुराने समय में, पहले
कुत्र	=	कहाँ	पृथक्	=	अलग से

यत्र	=	जहाँ	दिवा	=	दिन में
अत्र	=	यहाँ	दिष्ट्या	=	भाग्य से
तत्र	=	वहाँ	प्रतिदिनम्	=	प्रतिदिन
सर्वत्र	=	सब जगह	प्रत्युत्	=	इसके विपरीत
च	=	और	प्राक्	=	पहले
वा	=	अथवा	प्रातः	=	सबेरे
एव	=	ही	वै	=	अवश्य ही
सत्वरम्	=	शीघ्र	विना	=	बिना
बहिः	=	बाहर	यत्	=	चूँकि
वृथा	=	व्यर्थ में	सद्यः	=	अभी–अभी
मा	=	मत (नहीं)	समम्	=	बराबर
उच्चैः	=	ऊँचा	सम्प्रति	=	अभी (इस समय)
नीचैः	=	नीचे	सम्यक्	=	पूर्णरूप से
धिक्	=	धिक्कार	सर्वतः	=	सभी ओर से
इतस्ततः	=	इधर–उधर	सर्वदा	=	सदा
यथा	=	जैसे	साक्षात्	=	सामने
तथा	=	वैसे	सायम्	=	संध्या के समय
प्रायः	=	प्रायः, अधिकांश	हि	=	अवश्य ही
स्वस्ति	=	कल्याण हो			

नोट :– सभी वर्ण, उपसर्ग और प्रत्यय, अव्यय की श्रेणी में आते हैं।